राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद का अधिवेशन सम्पन्न

विवेक और संयम के अभाव में होता है जीवन खतरनाक

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 26 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि विवेक और संयम के अभाव में आदमी का जीवन खतरनाक हो सकता है। इसलिए विवेक और संयम की चेतना जगानी जरूरी है। संयम की, अनुकंपा की चेतना जागृत कर हम अणुव्रत के कार्यों को गति दें सकते हैं। शिक्षक संसद के कार्यकर्त्ता अपने ढंग से कार्य करते रहें। जब काम अच्छा होगा तो उसकी मूल्यवता सबको समझ में आ जायेगी।

उक्त विचार उन्होंने राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के 14वें अधिवेशन की सम्पन्नता पर व्यक्त किये। इस अवसर पर उन्होंने संसद को राष्ट्रीय सहसंयोजक थामला निवासी एवं मुम्बई प्रवासी धर्मचन्द जैन 'अन्जाना' सरदारशहर के रेंवतमल भाटी, विहार के बिहार के नवलकिशोरसिंह, जयपुर के गोपीकृष्ण सिद्ध को 'अणुव्रतसेवी' संबोधन से सम्बोधित किया।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मोहजीतकुमार, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, रतनलाल जैन, धर्मचन्द जैन 'अन्जाना' ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। समापन के अवसर पर देशभर से पधारे शिक्षकों ने सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित कर अनुपालना का संकल्प व्यक्त किया। इसके अन्तर्गत एक करोड़ लोगों को एक वर्ष से नशामुक्त बनाना, 21 राज्यों में राज्य स्तरीय अधिवेशन आयोजित करना, जिला स्तरीय सम्मेलन आयोजित करेंगे तथा अणुव्रत आन्दोलन में मुस्लिम समाज की भागीदारी विषयक गतिविधियों को पुनः संचालित करना शामिल है। अधिवेशन में सहयोग हेतु अध्यक्ष भीखमचन्द नखत ने तेरापंथ समाज सरदारशहर के पदाधिकारियों को आभार ज्ञापित किया।

– शीतल बरड़िया